अंगुत्तर निकाय

हिंदी अनुवाद

भाग - १

विपश्यना विशोधन विन्यास

अंगुत्तर निकाय

हिंदी अनुवाद

भाग - १

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

अंगुत्तर निकाय

विषय-सूची

प्राक्कथन अ--ऐ

अंगुत्तर निकाय, एकक-निपात

१. रूप आदि वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - १
२. नीवरण-प्रहाण वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ३
३. अकर्मणीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ६
४. अदान्त (दमन न किया हुआ) वर्ग - - - - - - - - - ७
५. प्रणिहित एवं पारभाषी (सुबोध) वर्ग - - - - - - - - ८
६. क्षणिक वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - १०
७. प्रयत्नारंभआदि वर्ग - - - - - - - - - - - - - - १२
८. कल्याणमित्रादि वर्ग - - - - - - - - - - - - - - १४
९. प्रमादादि वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - १५
१०. द्वितीय प्रमादादि वर्ग - - - - - - - - - - - - - १६
११. अधर्म वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - १९
१२. अनपराध वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - १९
१३. एक पुद्गल वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - २१
१४. एतदग्र वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २३
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २३
२. द्वितीय वर्ग- - - - - - - - - - - - - - - - २४
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २५
४. चतुर्थ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २५
५. पंचम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २६
६. षष्ठ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २७
७. सप्तम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २८
१५. असंभव वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २९
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - २९
२. द्वितीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३०
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - ३१

१६. (बुद्धोपदिष्ट) एक धर्म - - - - - - - - - - - - - ३३
१. प्रथम वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ३३
२. द्वितीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ३४
३. तृतीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ३६
४. चतुर्थ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ३८
१७. प्रशांतकर धर्म वर्ग - - - - - - - - - - - - - ४१
१८. क्षणिक वर्ग (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - ४२
१९. कायगत-स्मृति वर्ग - - - - - - - - - - - - - ४८
२०. अमृत वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ५०

अंगुत्तर निकाय, द्विक निपात

१. प्रथम पंचाशतक - - - - - - - - - - - - - - ५२
(१). करणीय वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ५२
१. दोष सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - ५२
२. प्रधानसुत्त - - - - - - - - - - - - - - ५३
३. अनुतापसुत्त - - - - - - - - - - - - - - ५४
४. अननुतापसुत्त - - - - - - - - - - - - - ५४
५. उपज्ञातसुत्त - - - - - - - - - - - - - ५४
६. संयोजनसुत्त - - - - - - - - - - - - - ५५
७. कृष्णसुत्त - - - - - - - - - - - - - - ५६
८. शुक्लसुत्त - - - - - - - - - - - - - - ५६
९. चर्या (आचरण) सुत्त - - - - - - - - - - ५६
१०. वर्षोपनायिकासुत्त - - - - - - - - - - ५६
२. प्रबंध कौशल वर्ग - - - - - - - - - - - - - ५६
३. मूर्ख वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ६३
४. समचित्त वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ६६
५. परिषद वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ७४
२. द्वितीय पंचाशतक - - - - - - - - - - - - - ८१
(६) **१. पुद्गल वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - ८१
(७) **२. सुख वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - - ८४
(८) **३. सनिमित्त वर्ग** - - - - - - - - - - - - - ८६

(९) ४. **धर्म वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - - - ८७
(१०) ५. **बाल वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - - ८८
३. तृतीय पंचाशतक - - - - - - - - - - - - - - ९१
(११) १. **आशा दुस्त्याज्य वर्ग** - - - - - - - - - - - ९१
(१२) २. **कामना वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - ९३
(१३) ३. **दान वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - - ९७
(१४) ४. **सत्कार वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - ९९
(१५) ५. **समापत्ति वर्ग** - - - - - - - - - - - - - १००
१. क्रोध पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - १०१
२. अकुशल पर्याय - - - - - - - - - - - - - - **१०४**
३. विनय पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - **१०४**
४. राग पर्याय - - - - - - - - - - - - - - - **१०६**

अंगुत्तर निकाय, त्रिक निपात

१. प्रथम पंचाशतक - - - - - - - - - - - - - - *१०८*
१. मूर्ख वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - १०८
१. भय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १०८
२. लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १०८
३. चिंतन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १०९
४. अत्यय (दोष) सुत्त - - - - - - - - - - - १०९
५. अयथार्थ सुत्त - - - - - - - - - - - - - ११०
६. अकुसल सुत्त - - - - - - - - - - - - - ११०
७. सावद्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - १११
८. दुर्भाव सुत्त - - - - - - - - - - - - - १११
९. उच्छिन्नमूल सुत्त - - - - - - - - - - - १११
१०. मल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ११२
२. रथकार वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ११३
१. ज्ञात सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ११३
२. स्मरणीय सुत्त - - - - - - - - - - - - - ११३
३. आशा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ११४
४. चक्रवर्ती सुत्त - - - - - - - - - - - - - ११६

५. सचेतन सुत्त - - - - - - - - - - - - - ११७
६. अनुलोम मार्ग सुत्त - - - - - - - - - - - १२०
७. स्वकष्ट सुत्त - - - - - - - - - - - - - १२१
८. देवलोकसुत्त - - - - - - - - - - - - - - १२१
९. वणिक सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - १२२
१०. वणिक सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - १२३
३. पुद्गल वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - १२४
१. समिद्ध सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १२४
२. ग्लान सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १२६
३. संस्कार सुत्त - - - - - - - - - - - - - १२७
४. बहूपकार सुत्त - - - - - - - - - - - - - १२८
५. वज्रोपम सुत्त - - - - - - - - - - - - - १२९
६. सेवितव्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - १३०
७. जुगुप्सितव्य (घृणा करने योग्य) सुत्त - - - - - १३१
८. गूथभाषी (विष्ठा) सुत्त - - - - - - - - - १३३
९. अंध सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १३४
१०. अवकुब्ज (औंधा घड़ा) सुत्त - - - - - - - १३६
४. देवदूत वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - १३८
१. सब्रह्मक सुत्त - - - - - - - - - - - - - १३८
२. आनन्द सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १३९
३. सारिपुत्त सुत्त - - - - - - - - - - - - - १४०
४. निदान सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १४१
५. हत्थक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १४३
६. देवदूत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १४४
७. चतुर्महाराज सुत्त - - - - - - - - - - - - १४९
८. चतुर्महाराज सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - १५१
९. सुकुमार सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५१
१०. अधिपति सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५४
५. चूळ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - १५६
१. सन्मुखभाव सुत्त - - - - - - - - - - - - १५६
२. त्रय स्थानिक सुत्त - - - - - - - - - - - - १५७
३. ध्यातव्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५७
४. कथाफल सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५८

५. पंडित सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १५८
६. सीलवंत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १५८
७. संस्कृत-लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - - १५९
८. असंस्कृत-लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - १५९
९. पर्वतराज सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५९
१०. कठोर प्रयत्न करणीय सुत्त - - - - - - - - १६०
११. महाचोर सुत्त - - - - - - - - - - - - - १६०
२. *द्वितीय पंचाशतक* - - - - - - - - - - - - १६२
(६) **१. ब्राह्मण वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - १६२
१. दो ब्राह्मण सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - १६२
२. दो ब्राह्मण सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - १६३
३. अन्य ब्राह्मण सुत्त - - - - - - - - - - - १६४
४. परिव्राजक सुत्त - - - - - - - - - - - - १६५
५. निर्वृत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १६६
६. पलोक (क्षय) सुत्त - - - - - - - - - - - - १६७
७. वच्छगोत्त सुत्त - - - - - - - - - - - - - १६८
८. तिकण्ण सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १७०
९. जाणुस्सोणि सुत्त - - - - - - - - - - - - - १७४
१०. सङ्गारव सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १७६
(७) **२. महा वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - - १८१
१. विभिन्न वाद सुत्त - - - - - - - - - - - - - १८१
२. भय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १८५
३. वेनागपुर सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १८८
४. सरभ सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १९१
५. केसमुत्ति सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १९४
६. साळ्ह सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २००
७. कथावस्तु सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २०४
८. अन्यतैर्थिक सुत्त - - - - - - - - - - - - - २०७
९. अकुसल-मूल सुत्त - - - - - - - - - - - - - २०९
१०. उपोसथ सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २१३
(८) **३. आनन्द वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - २२२
१. छन्न सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २२२

२. आजीवक सुत्त - - - - - - - - - - - - २२४
३. महानाम शाक्य सुत्त - - - - - - - - - - - २२६
४. निर्ग्रंथ सुत्त - - - - - - - - - - - - - २२७
५. परामर्श सुत्त - - - - - - - - - - - - - २२९
६. भव सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - २३०
७. भव सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - २३१
८. शीलव्रत सुत्त - - - - - - - - - - - - २३२
९. सुगंधि सुत्त - - - - - - - - - - - - - २३२
१०. सहस्रचूळ **लोकधातु सुत्त** - - - - - - - २३४
(९) **४. श्रमण वर्ग** - - - - - - - - - - - - - २३६
१. श्रमण सुत्त - - - - - - - - - - - - - २३६
२. गर्दभ सुत्त - - - - - - - - - - - - - २३६
३. क्षेत्र सुत्त - - - - - - - - - - - - - २३६
४. वज्जिपुत्र सुत्त - - - - - - - - - - - - २३७
५. शैक्ष सुत्त - - - - - - - - - - - - - २३८
६. शिक्षा सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - २३८
७. शिक्षा सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - २४०
८. शिक्षा सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - - - २४१
९. शिक्षात्रय सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - २४२
१०. शिक्षात्रय सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - २४३
११. सङ्कवा सुत्त - - - - - - - - - - - - २४४
(१०) **५. नमक वर्ग** - - - - - - - - - - - - - २४७
१. अत्यावश्यक सुत्त - - - - - - - - - - - २४७
२. प्रविवेक (एकांत) सुत्त - - - - - - - - - २४८
३. शरद सुत्त - - - - - - - - - - - - - २४९
४. परिषद सुत्त - - - - - - - - - - - - - २५०
५. आजानीय (श्रेष्ठ घोड़ा) सुत्त (प्रथम) - - - - २५१
६. आजानीय सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - २५२
७. आजानीय सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - - २५३
८. पोत्थक (मकची केश का बना कपड़ा) सुत्त - - २५४
९. नमक सुत्त - - - - - - - - - - - - - २५६
१०. स्वर्णकार (मिट्टी दूर करने वाला) सुत्त - - - २६०
११. निमित्त सुत्त - - - - - - - - - - - - २६३

३. तृतीय पंचाशतक - - - - - - - - - - - - - २६५
(११) १. संबोधि वर्ग - - - - - - - - - - - - - २६५
१. पूर्वसंबोध सुत्त - - - - - - - - - - - - - २६५
२. आस्वाद सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - २६६
३. आस्वाद सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - २६६
४. श्रमण-ब्राह्मण सुत्त - - - - - - - - - - - २६७
५. रोदन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २६७
६. अतृप्ति सुत्त - - - - - - - - - - - - - २६८
७. अरक्षित सुत्त - - - - - - - - - - - - - २६८
८. दूषित-चित्त सुत्त - - - - - - - - - - - - २६९
९. हेतु सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - २६९
१०. हेतु सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - २७०
(१२) २. अपाय (नरक) वर्ग - - - - - - - - - - - २७२
१. नरकगामी सुत्त - - - - - - - - - - - - - २७२
२. दुर्लभ सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २७२
३. अपरिमेय सुत्त - - - - - - - - - - - - - २७२
४. आनेञ्ज सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २७३
५. असफलता-सफलता सुत्त - - - - - - - - - - २७४
६. अनुलोम मार्ग सुत्त - - - - - - - - - - - २७६
७. कर्मांत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २७६
८. शुचिता सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - २७८
९. शुचिता सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - २७८
१०. मौन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २८०
(१३) ३. कुसिनार वर्ग - - - - - - - - - - - - - २८०
१. कुसिनार सुत्त - - - - - - - - - - - - - २८०
२. कलह सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - २८२
३. गोतमक-चेतिय सुत्त - - - - - - - - - - - २८३
४. भरण्डुकालाम सुत्त - - - - - - - - - - - - २८३
५. हत्थक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २८५
६. उच्छिष्ट सुत्त - - - - - - - - - - - - - २८६
७. अनुरुद्ध सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - २८८
८. अनुरुद्ध सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - २८८
९. प्रतिच्छन्न सुत्त - - - - - - - - - - - - - २८९

१०. रेख सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २८९
(१४) ४. **योद्धाजीव वर्ग** - - - - - - - - - - - - - २९०
१. योद्धा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९०
२. परिषद सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
३. मित्र सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
४. उत्पाद सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९२
५. केसकम्बल सुत्त - - - - - - - - - - - - - २९३
६. संपदा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९३
७. वृद्धि सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९४
८. अदमनीय सुत्त - - - - - - - - - - - - - २९४
९. परिष्कृत अश्व सुत्त - - - - - - - - - - - २९५
१०. श्रेष्ठ-अश्व सुत्त - - - - - - - - - - - - २९६
११. मोरनिवाप सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - २९७
१२. मोरनिवाप सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - २९८
१३. मोरनिवाप सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - २९८
(१५) ५. **मंगल वर्ग** - - - - - - - - - - - - - - २९८
१. अकुशल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९८
२. सावद्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
३. विषम सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
४. अशुचि सुत्त - - - - - - - - - - - - - - २९९
५. मूलोच्छेद सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - २९९
६. मूलोच्छेद सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - ३००
७. मूलोच्छेद सुत्त (तृतीय) - - - - - - - - - ३००
८. मूलोच्छेद सुत्त (चतुर्थ) - - - - - - - - - ३००
९. वंदना सुत्त - - - - - - - - - - - - - - ३०१
१०. पूर्वाह्न सुत्त - - - - - - - - - - - - - ३०१
(१६) ६. **अचेलक वर्ग** - - - - - - - - - - - - - ३०१
(१७) ७. **कर्म पर्याय** - - - - - - - - - - - - - ३०४
(१८) ८. **राग पर्याय** - - - - - - - - - - - - - ३०६

परिशिष्ट - - - - - - - - - - - - - - - - ३०७

प्राक्कथन

बोधगया में बोधि प्राप्ति के बाद सम्यक संबुद्ध गौतमबुद्ध ने पैंतालीस वर्षों तक गांव, निगम, नगर, जनपद में चारिका करते हुए भिन्न-भिन्न लोगों से अकेले तथा समूह में मिलकर दुःख को दूर करने तथा सुखमय और शांतिमय जीवन जीने की कला सिखाने के लिए जो उपदेश दिये उनका वर्गीकरण बाद में तीन पिटकों के रूप में किया गया। ये तीन पिटक हैं – विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। विनय पिटक में भिक्षु तथा भिक्षुणी जीवन को सम्यक रूप से शीलपूर्वक बिताने के लिए तथा संघ को सुचारु रूप से चलाने के लिए बनाये गये नियम तथा समय-समय पर उनमें किये गये परिवर्तन संगृहीत हैं। इसलिए विनय पिटक को 'आणा (आज्ञा) देसना' कहते हैं। सुत्तपिटक को 'वोहार (व्यवहार) देसना' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें प्रमुखतः बुद्ध के और उनके प्रधान शिष्यों के जीवन में व्यवहार में लाये जाने वाले उपदेशों का संग्रह है। इन उपदेशों में जो सुत्त (सु+उक्त) कहे जाते हैं उन्हें सरल शैली में उपयुक्त उपमाओं तथा रूपकों के माध्यम से आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए बताया गया है। साथ ही ऐसा जीवन बिताने में कौन-कौन-सी बाधाएं आ सकती हैं, उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है – इन बातों पर प्रभूत प्रकाश डाला गया है। सिर्फ आध्यात्मिक जीवन के बारे में ही नहीं, बल्कि भौतिक जीवन को भी कैसे अच्छी तरह जीया जा सकता है तथा सामाजिक जीवन में शांति और समरसता कैसे लायी जा सकती है – इन सभी बातों पर भी प्रकाश डाला गया है। अभिधम्म पिटक में परमार्थ सत्य से संबंधित बातें हैं इसलिए इसे 'परमत्थ देसना' कहते हैं। अभिधर्म के अनुसार परमार्थ चार हैं – चित्त, चैतसिक, रूप तथा निर्वाण। इस पिटक में इन्हीं परमार्थों का विस्तार से वर्णन है।

सुत्तपिटक पांच निकायों में विभक्त है – दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय और खुद्दक निकाय।

दीघ निकाय में बड़े आकार के चौंतीस सुत्त, मज्झिम निकाय में मध्यम आकार के एक सौ बावन सुत्त संगृहीत हैं। संयुत्त निकाय में सात हजार सात सौ बासठ सुत्त हैं और इसे संयुत्त इसलिए कहा जाता है कि इसके पहले भाग में गाथा और गद्य दोनों मिले हुए हैं। अंगुत्तर निकाय में नौ हजार पांच सौ सत्तावन सुत्त हैं जो ग्यारह निपातों में संगृहीत हैं। खुद्दक निकाय में छोटे-छोटे उन्नीस प्रकरणों का संग्रह है जैसे खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात आदि।

इन निकायों के सुत्तों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि इनमें अभिधर्म के तत्त्व हैं। दीघ निकाय के सामञ्ञफलसुत्त में चार रूपावचर ध्यानों का, पांच ध्यानांगों का, पांच नीवरणों का उल्लेख है तो मज्झिम निकाय के सम्मादिट्ठि सुत्त में